कलकत्ता

२०१, हरिसन रोड के नरसिह प्रेसमें

बाबू अमिचन्द गोलछा

द्वारा मुद्रित।

प्रस्तावना

प्रिय सज्जनों !

श्री जिनेश्वर देवकी कृपासे सर्व प्रथम यह ट्रेक्ट आप की सेवामें उपस्थित किया जाता है जिसमें प्रभु स्तुति मुनि गुण गायन तथा उपदेशक भजन राग रागिनी एवं नई नई तर्जें लावणी आदि जो कि मेरे भ्राता नेमचन्द के निर्माण किये हुए हैं इन के अतिरिक्त अन्यभी उपदेशक भजन इसमें दिये गये हैं सो आप पढ़ कर जैन वालसभाको उत्साहित करेंगे एव और भी समय समय पर अच्छे २ ट्रेक्ट समाजोन्नति के लिये विद्वज्जनों से लिखवाकर इस सभा की ओर से प्रकाशित किये जायगें

पर्युषण पर्व निकट होने के कारण इस पुस्तक को छपवाने में शीघ्रताकी गई है, अतः सम्भव है कि इस पुस्तिका में त्रुटियें रह गयी हों इसलिये पाठकवृन्दसे निवेदन है कि वे सुधार कर पढ़ें और भूल चूक क्षमा करें

विनीत

फूसराज वच्छावत

मंत्री—श्री जैनवाल सभा,

कलकत्ता

॥ श्री वीतरागाय नम ॥

॥ श्लोक ॥

अर्हन्तो भगवंत इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धस्थिताः
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः
श्री सिद्धान्त सुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयराधकाः
पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥

तीर्थंकरों का स्तुती ।

भजन नं० ॥ १ ॥

तर्ज—थियेटर ।

अरे हारें भाईयों चौवीसों जिनवर ध्यावो ॥ टेर ॥ रिषभ अजित सभव अभिनन्दन । सुमति पद्म सुपार्श्व चन्दा प्रभु ॥ सुविधि शीतल गुण गावो रे भाइयों ॥ १ ॥ चौं ॥ श्रेयांस वासु पूज्य विमल जिनन्दा । अनन्त धर्म शांति सुखकदा ॥ सदा ध्यान लगावोरे भाइयों ॥ २ ॥ चौं ॥ कुंथु अरि मल्लि मुनी सुव्रतजी । नमिनेम पार्श्व महावीर जी ॥ नित उठ शीश नमावोरे भाइयों ॥३॥ चौं ॥ नेम चन्द्र कहे प्रभु को भजना । क्रोध लोभ माया को तजना ॥ नाम लियां सुख पावोरे भाइयों ॥ ४ ॥ चौं ॥

॥ इति ॥

—:o—

भजन नं० ॥ २ ॥

तर्ज—कव्वाली

प्रभु है चाह दर्शन की दिखादोगे तो क्या होगा ॥ टेर ॥ रिषभ अजित संभव प्यारे, अभिनन्दन प्रभु भजना । सुमति नाथ

प्रभु सुमति वरता दोगे तो क्या होगा ॥ प्रभु ॥ १ ॥ पद्म सुपार्श्व चन्दा प्रभु, प्यारे हैं मोक्ष के दाता। हमारा कर्म रूपी जाल हटा दोगे तो क्या होगा ॥ प्रभु ॥ २ ॥ सुविधि शीतल और श्रेयांस, वास पूज्य धरम जहाज। विमल प्रभु मोक्ष का मार्ग वतादोगे तो क्या होगा ॥ प्रभु ॥ ३ ॥ अनन्त धर्म शांति नाथ प्यारे, भजो क्षय पाप हो सारे। कुंथु अरि मल्लिनाथ स्वामी वुलालोगे तो क्या होगा ॥ प्रभु ॥ ४ ॥ मुनि सुव्रत नमिनेम, इनको भजो रख के प्रेम। पार्श्व प्रभु डुवती नैया तिरा दोगे तो क्या होगा ॥ प्रभु ॥५॥ श्री महावीर प्रभु स्वामी, अर्ज मोरी स्वीकारोनी। नेम चन्द का जनम मरणा कटा दोगे तो क्या होगा ॥ प्रभु ॥ ६ ॥

॥ इति ॥

—:०:—

भजन नं० ॥ ३ ॥

तर्ज—सियाको हर ले जाउंगा।

प्रभु रिषभ जिनन्द गुण गाऊंगा ॥ टेक ॥ मरूदेवी मात नाभि के नंदन तिनके पुत्र को शीश नमाऊंगा ॥ प्रभु ॥ १ ॥ दीन वन्धु दीन दयाला। हरदम रटने में चित्त लगाऊंगा ॥ प्रभु ॥ २ ॥ क्रोध लोभ मान माया सतावत इनको दूर हटाऊंगा ॥ प्रभु ॥ ३ ॥ रात दिवस प्रभु भजने में दिल को खुव जमाऊगा ॥ प्रभु ॥ ४ ॥ नेम चन्द प्रभु शरणतिहारें जिन नाम से प्रीत लगाऊंगा ॥ ५ ॥

॥ इति ॥

भजन नं० ॥ ४ ॥

—तर्ज़ लावनी ।

नाथों के नाथ मैं हु अनाथ प्रभु शांति नाथ तारो ॥ टेर ॥ माता प्रभु की अचला देहे । पिता विश्वसेन राय, जन्म लियो प्रभु हस्तिनापुर मे मृगी रोग मिटाय । जनम तेहि देश मे सुख कारो ॥ ॥ ना ॥ १ ॥ मोहिनी मूरत सोहिनी सूरत प्रभु है जिम चन्दा । प्रभु को भजो तुम सारे भाई जन्म मरण कटे फन्दा ॥ फेर न हो जन्म मरण वारंवारो ॥ ना ॥ २ ॥ क्रोध मान माया को जीत लिया प्रभु अठारह दोष । जो कोई प्रभु का गुण गावे रोग कटे कुष्ट और कोड़ । सोलमो तीर्थंकर रखवारो ॥ ना ॥ ३ ॥ नाथ निरंजन सव दुख भजन है जगतेश्वर आप । यह सुनकर मैं आयो शरण में हरो सभी मेरे पाप ॥ नेम का जन्म मरण निवारो ॥ ना ॥ ४ ॥

॥ इति ॥

—:o:—

भजन नं० ॥ ५ ॥

तर्ज़—चोपाई—रामायण ।

शांति शांति जपे जो कोई ।
ता घर विघ्न कवहुं न होई ॥ १ ॥
शांति नाथ प्रभु कर्म खपाई
मोक्ष गये सर्व दुख नसाई ॥ २ ॥
शांति नाम रटते सुख कारी

पावत मन व छित ऋद्धि सारी ॥ ३ ॥
शाति जपत जो करत है कामा
निश्चय सोई होय अभिरामा ॥ ४ ॥
भुत प्रेत या नाम से जावे
डायन शायण पास न आवे ॥ ५ ॥
डाकु और ठग चोर लुटेरा
होवत सव दुख दूर वहुतेरा ॥ ६ ॥
रोग सोग सव मिटत है भाई
प्रभु के नाम सर्व सुख दाई ॥ ७ ॥
शाति नाम मन चित्त जोध्यावे
होवत दुख दुर अति सुख पावे ॥ ८ ॥
भीड परे समरो प्रभु सारे
होवत है मन काम तत्कारे ॥ ९ ॥
अजर अमर भवके दुःख भंजन
अष्ट कर्म काटे अरि गंजन ॥ १० ॥
या भव परभव जो सुख चावे
शांति जपो दुर पाप पलावे ॥ ११ ॥
कर्म काट भव दुःख मिटावे
नेम चन्द शान्ति गुण गावे ॥ १२ ॥

भजन नं० ॥ ६ ॥

तर्ज — सांवर बंसी वाला ।

शांति जपो तुम माला सुनो लाला है आला वह है दीन दयाला ॥ टेर ॥ शांति शांति जपो सबभाई, शांति प्रभु का नाम सुहाई, शांति नाम है अति सुख दाई, पार लंघाने वाला ॥ १ ॥ शांति जप्या सुख संपत पावे, दुख दुर हो आनन्द पावे, पाप कर्म को दुर हटावे, भक्तन के रिछपाला ॥ शांति ॥

॥ इति ॥

—:o—

भजन नं० ॥ ७ ॥

तर्ज—कांटो लागो रे देवरिया ।

चालो ढुंढण को सहेलियां मोरा नेम पिया किहां जाय ॥टेर॥ रथ पर चढ़ जादुपति आये, छप्पन कोड़ यादव संग लाये आप जान सजाय ॥ मोरा ॥ १ ॥ नेम को देख पशु चिल्लाये, नेम जिनेश्वर करुणा लाये पशुओं की सुनी हाय ॥ मोरा ॥ २ ॥ तो रन से रथ फेर है लीना, ससार को प्रभु तज दीना संजम की दिल मांय ॥ मोरा ॥ ३ ॥ चलो सखियों गिरनार को चलिये, चलके प्रभु जी के दरशन करीये मन सेवा के मांय ॥ मोरा ॥ ४ ॥ नेम राजुल दोनों दीक्षा लेई, मोक्ष गये हैं कर्म खपाइ नेम चन्द गुण गाय ॥ मोरा ॥ ५ ॥

॥ इति ॥

भजन नं० ॥ ८ ॥

तर्ज—थियेटर ।

स्वामी पार्श्व नाथ जी का गुण वरनन करता कि प्रभु पाप सभी हरता ॥ टेर ॥ माता वामा देहै आपकी पिता अश्वसेन राय । चौदे स्वप्ना दिखाय कर माता के कुख में आय ॥ प्रभु जन्मे आनन्द सुख करता ॥ गुण ॥ १ ॥ जन्म लियो शुभ वेला में आये इन्द्र इन्द्राणी मिल सब मेरुगिर पर जाय के किया अनहद मोहच्छत्र प्रभु को सब लेने को झुरता ॥ गुण ॥ २ ॥ एक दिन गंगा तट पर आये माता जी के लार । नाग नागिणी जलता देख कर तुरत निकाले बाहर । नाग नागिणी हुवा देवता ॥ गुण ॥ ३ ॥ पीछे में प्रभु सजम लीना तीर्थ थापे चार । साधु साध्वि श्रावक श्राविका प्रभु तेईसमां अवतार । पाप कटत है प्रभु समरतां ॥ गुण ॥ ४ ॥ प्रभु का जो गुण गावे, मन वछित फल पावे । दान शील तप भावना भावे वह शिवपुर जावे । नेम चन्द शरणा गत पड़ता ॥ गुण ॥ ५ ॥

॥ इति ॥

—:०:—

भजन नं० ॥ ९ ॥

तर्ज लावनी ।

धन धन महावीर प्रभु भव के दुःख मिटावना जी ॥ टेर ॥

जन्मे क्षत्रिय कुंड मझारे, आये ईन्द्र सुरेन्द्र सारे, सब मिलकर रहे जै जै कारे, गावत मंगल गीत प्रभु को सब रिझावना जी ॥ धन ॥ १ ॥ माता त्रिसला की बलिहारी, सिद्धार्थ जी राज्य अधिकारी, भाई नदीवर्द्धन सुख कारी, हर्षित सब नगरी के लोग बटत वधावना जी ॥ धन ॥ २ ॥ सुरत मुरत चन्द्र सरीखी, लागत सब कोहि अति नीकी, कहते सबहि निरखि निरखी । वड़ भाग्य तुम्हारा पुत्र अति सुहावना जी ॥ धन ॥ ३ ॥ जानी अथिर ससार की माया, दीक्षा लेई कर्म खपाया, परिषह अति कठिन ही पाया, उपज्या केवल ज्ञान ध्यान शुक्ल शुभ भावना जी ॥ धन ॥४॥ कई भवजीवों को तारे जो पाप कम निवारे, शुभ भावना भावो सारे कहे नेमचन्द्र नित ऊठ प्रभु ध्यान लगावना जी ॥ धन ॥

॥ इति ॥

—०:*:०—

मुनि गुण गायन ।

भजन नं० ॥ १० ॥

तर्ज—हाय सइयां परुं मैं तोरे पइयां ।

पुज्य जी आये सब संग मिल दरशन पाये खुशी हुए हैं नर नार ॥ टेर ॥ पुज्य श्री श्री लाल जी प्यारा, भव जीवों का करे

निस्तारा। पाले पंच महाव्रत जान, है गुण रत्नो की खान पंडित भारी ममता मारी, राग द्वेप छांड़ि करते पर उपकार॥ पुज्य ॥१॥ छाईस ठाणों से आप पधारे हैं, इस सच्चे जैन धर्म की उन्नति चढ़ाते हैं, कीया वीकाणे चौमास पुरी हुई सभी की आस है गुण धारे मुनिवर सारे हां चरण कमल चित्त लारे नेमचन्द्र ऐसे गुरु धार ॥ पुज्य ॥ २ ॥

॥ इति ॥

—·o—

भजन नं० ॥ ११ ॥

तर्ज—तोरी छल बल है न्यारी।

माता चान्दा के लाल पुज्य * श्री दयाल कहुं इनका अहवाल सुनो धर कर ध्यान ॥ टेर ॥ सजम की गुरु दिल में धर के त्यागी जी त्यागी है परणी जो नार, छोड़ा छोड़ा संसार लीना संजम भार करते पर उपकार तुम्हें धन धन धन ॥ १ ॥ पुज्य श्री लाल जी मुनि है अति गुनी जिन की अजव धुनि करू उनको नमन भव जीवों पर महर करी नेकी नाजी कीना। वीकाणे चौमास, गुणवत मुनी साथ लगा धर्म का ठाठ वांचे आचारग पाठ तुम्हें धन ॥३॥ मुनि कर्म चद जी सग करे कर्मों से जग हरे पाखडियों का भग करे ज्ञान का मनन, मोक्ष कादे मार्ग वतावे जैन धर्म को करते

* नोट—खेद के साथ लिखना पड़ता है कि पूज्य श्री श्री लाल जी महाराज का स्वर्गवास स० १९७७ मिति आपाढ शुक्ल ३ को हो गया। आप जैन साधु समाज में कोहेनर थे।

रौशन धरते प्रभुका ध्यान नहीं है अभिमान देवे सभी को ज्ञान तुम्हें धन ॥३॥ तपस्वी केवल चन्द जी महाराज हैं शीतल मुनिराज देवे सभी को साज करे पाप का दमन, तपस्या का तो ठाठ लगा है, कहां लग करूं मैं उनका कथन हुआ बहुत पच्चखाण सभी सुनते व्याख्यान गावे नेमचन्द नान तुम्हें धन ॥ ४ ॥

॥ इति ॥

—:o:—

भजन नं० ॥ १२ ॥

तर्ज—लावनी ।

दरशन हरख से कीना आप का दरशन हरख से कीना । सभी मिल श्रावक श्राविका पूज्य का दरशन हरख से कीना ॥ टेर ॥ चूनीलाल जी पिता आपके चांद कूँवर जी माता । टौंक शहर में जन्म आपका गोत्रवम्ब विख्याता ॥ संयम वृधिचन्द मुनि पै लीना ॥ सभी मिल ॥ १ ॥ सर्व गुणों की खान मुनीश्वर कहतां पार नहीं आवे । पंच महाव्रत धारी पूज्य जैन धर्म को खूब दीपावे ॥ आप के चरण कमल चित्त दीना ॥ सभी ॥ २ ॥ सतरे भेदे संयम पाले दयाकी राय बतावे । दोष बयालीस टाल के श्री मद् आहार सुजतो लावे ॥ रहवे वो तप जप में लयलीना ॥ ॥सभी ॥ ३ ॥ उगणीसै सतावन साल आचारज पदवी पाया । चारों तीर्थ मिल मोच्छव कीना सबही के मन भाया ॥ वीर के पाट इठंतर रंग भीना ॥ सभी ॥ ४ ॥ धर्म के मंडन पाप के खंडन

पाखंड दुर हटावे। ज्ञान के सागर गुण के आगर अमृत वाणी सुनावे। सूत्र सिद्धांत सभी को चीना॥ सभी मिल ॥५॥ स्वमति अन्यमति आवे परखदा सभी को ज्ञान सुनावे। जो कोई प्रश्न पूछे उसका उत्तर तुरत बतावे॥ प्रेम रस सब ने हि मिल कर पीना॥ सभी॥६॥ छाईस ठाणों से आप विराजो गुण रत्नो की माला। कर्मचन्द जी महाराज साथ में धीरज बुद्धि वाला॥ ज्ञान रतनगढ़ में दीना॥ सभी॥७॥ करो चौमासो बीकानेर में या सब की है अरजी। हाथ जोड़ कर करूं अर्ज अर्जी पर होवे मरजी॥ मात्मा आवड़ ने छंद कीना॥ सभी॥८॥

॥ इति ॥

—:०:—

भजन नं० ॥ १३ ॥

तर्ज—थियेटर।

अरे हांरे भाइयों सब मिल पुज्य गुण गावो॥ टेर॥ पुज्य श्री मन्नालाल जी प्यारे, षटकाया केहैं रखवारे। पाप कर्म हटावो रे भाइयों॥ सब॥१॥ नांदी बाई हैं आपको माता तात अँबरचन्द जी सुख पाता। गुणों का पारन पावो रे भाइयों॥ सब॥२॥ जन्मे रत्नपुरी हरखाता, जात बोहोरों की है विख्याता। नित ऊठ सेवा चित्त लावो रे भाइयों॥ सब॥३॥ दीक्षा रत्न चन्दजी से लीनी, परिग्रह ममता है तज दीनी। अपनी आत्मा उजलावो रे भाइयों॥ सब॥४॥ पच महाव्रत निरमल पाले, जिन आज्ञा बाहिर नहीं चाले। जैनधर्म दीपावो रे भाइयों॥ सब॥५॥ नेम-

चन्द पुज्य दरशन करके, पाप कर्म से अतिहि थरके। आनन्द हि आनन्द करावो रे भाइयों ॥ सब ॥ ६ ॥

॥ इति ॥

भजन नं ॥ १४ ॥

तर्ज—आदि जिनन्द-राग सिहाना।

पुज्य जी का दरशन पाया आज मैंने पुज्य जी का दरशन पाया ॥ टेर ॥ पुज्य हमारे पंच महाव्रत पाले। क्रोध मान माया हटाया ॥ आज ॥ १ ॥ पुज्य मुन्नालाल जी हैं तप धारी, चौथमल जी की जाउं वलिहारी। धर्म को खुब दीपाया ॥ आज ॥२॥ सुमति पंच गुप्तीत्रण धारी, आहार करे दोष बयालीस टारी। ज्ञान ध्यान चित्तलाया ॥ आज ॥ ३ ॥ अष्ट ठाणे से पुज्य विराजे मुनिवर का गुण बहु दिस गाजे। वाणी अमृत वरसाया ॥ आज ॥ ४ ॥ सुत्र उत्तराध्ययन मुनि जी फरमाते, पडित अज्ञानी मरण बताते। भिन्न भिन्न कर समझाया ॥ आज ॥ ५ ॥ एक नव दोय सात के मांई जोधपुर विख्यात है भाई। नेमचन्द गुण गाया ॥ आज ॥ ६ ॥ एक अर्ज मुनिवर सुणलीजे, कल्पतो चौमासो वीकानेर कीजे। नरनारी बिनती कराया ॥ आय ॥ ७ ॥

॥ इति ॥

भजन नं० ॥ १५ ॥

तर्ज़—थियेटर ।

चलो रल मिल, चलो रल मिल, चलो रल मिल हम सब सारे, मुनिराज हैं तारन हारे ॥ टेर ॥ पुज्य जवाहिरलालजी मुनिराया । जैनधर्म को खूब दियाया ॥ क्रोध मान माया को मारे ॥ मुनि ॥ १ ॥ माता नाथि बाई के जाये । पिता जीवराजजी हरखाये ॥ जन्मे थांदले शहर सुखकारे ॥ मुनि ॥ २ ॥ दीक्षा मगन मुनि से पाई । मोतीलालजी है गुरुभाई ॥ जाऊं सदा ईनकी वलिहारे ॥ मुनि ॥ ३ ॥ पच महाव्रत निरमल पाले । पट्काया के हैं रखवारे ॥ सुमति पच गुप्ति त्रण धारे ॥ मुनि ॥४॥ नीति न्याय सिद्धांत अति जाने । जैन आगम खूब पहिचाने ॥ वाणी अमृत रस वरपारे ॥ मुनि ॥ ५ ॥ ऐक नव दोय सात में आये । मुनि एकादश सग लाये ॥ शहर बीकानेर गुलजारे ॥ मुनि ॥ ६ ॥ नेमचन्द मुनि गुण गावे । दरशन कर अति सुख पावे ॥ वदणा हो वारम्वारे ॥ मुनि ॥ ७ ॥

॥ इति ॥
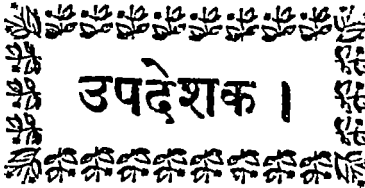
भजन नं० ॥ १६ ॥

तर्ज--लेलो २ वीर प्रभु प्यारे की लोड़िया लेलोजी ।

पुज्यजी का किया है दरशन के चित्त हरखाया जी ॥ टेर ॥ पंच महाव्रत निरमल पाले । पंच सुमति अनुसारे चाले नरनारी

के मन भाया ॥ केचि, ॥ १ ॥ सतरे भेद्रे संयम धारा । षटकाया के हैं रखवारा अमृत वाणी वरसाया ॥ केचि ॥ २ ॥ शांति मूरति चन्द्र सरीखी । अमृत वाणी जिनकी नीकी । ठाणायंग सुत्र सुनाया ॥ केचि ॥ ३ ॥ जवाहिर लालजी पूज्य अति गुणवता । अष्ट ठाणा से है सूरि कता । छोड़ा इस जग को झूठी है माया ॥ ॥ केचि ॥ ४ ॥ हम सब मिल मुनिवर गुण गावें । बीकानेर सघ आनन्द पावें । नेमचन्द गुण गाया ॥ केचि ॥५॥ एक अर्ज मुनिवर सुन लीजे । कल्प तो चौमासो बीकाणै कीजे । मेरी विनती पै ध्यान कराया ॥ केचि ॥ ६ ॥

॥ इति ॥

भजन नं० ॥ १७ ॥

तर्ज—लावनी ।

सुनो सभा धर ध्यान कान दे नया तान इक गाते हैं । जीव दया और दान की महिमा इनका गुण वतलाते हैं ॥ टेर ॥ प्रश्न दया का पहिला चलत है अभयदान अति है मोटा । जीव वचाया

पाप वतावे उनका लक्षण है खोटा ॥ मेघरथ राजा दया जो पाली उनका यश हम गाते हैं ॥ जीव ॥१॥ सुत्र भगवती शतक पन्नर में प्रभु गोशाला वचाया है । उत्तर देने को ठौर न लाधी प्रभु को चूका वताया है । उनके नाम से भाग के खावे जरा शर्म नहीं लाते हैं ॥ जीव ॥ २ ॥ धर्म रुचि जिन दया के खातर कड़वा तुम्बा किया आहारे । स्वार्थ सिद्ध में जाय विराजे हो रहे जै जै कारे ॥ तैतीस सागर का आऊखा पाये आनन्द मंगल पाते हैं ॥ जीव ॥ ३ ॥ नेम नाथ बाईसवें जिनवर कृष्ण वासुदेव ले लारे । छप्पन क्रोड़ यादव मिल आये जान सजी खुब तइयारे ॥ वड़ी धूम से करी सवारी जूनागढ़ प्रभु आते हैं ॥ जीव ॥ ४ ॥ उग्रसेन राजा त्यारी के लिये पशुओं का वाड़ा भराया है । सुनी पुकार पशुओं की प्रभु जी करुणा करके छोड़ाया है ॥ तोरण से रथ फेरलिया प्रभु गिरनारी को जाते हैं ॥ जीव ॥ ५ ॥ पार्श्व प्रभुजी कुंवर पणेमें खेलण गये ग्राम के वारे । नाग नागणी जलता देख कर तुरत प्रभुजी ने निकारे ॥ प्रातःसमय उनका नाम लेने से करम सभी कट जाते हैं ॥ जीव ॥ ६ ॥ दया जगत में है अति सुंदर सुन लीजे सव नर नारे । जिन पुरुषों ने दया जो पाली शास्त्रमें है विस्तारे ॥ दया दान को जो उत्थापे सीधे नरक में जाते हैं ॥ जीव ॥ ७ ॥ कथन दान का दुजा चलत है इनकी कथा निराली है । सुपात्र दान जो नित उठ देवे सोई पुरुष वलिहारी है दान शीयल तप भावना भावे सीधा मोक्ष में जाते हैं ॥ जीव ॥८॥ चौवीस तीर्थंकर वरषो दान दे संजम सभी ने लीना है । एक क्रोड़ आठ लाख

सोनैय्या नित प्रति प्रभु ने दीना है॥ उन पुरुषों की जाऊं वलिहारी नित उठ शीश नमाते हैं॥ जीव॥ ६॥ दान दिया धनेशालभद्रजी जिनकी महिमा भारी है प्रदेशी राजा दान दियो है ·राय पसेणी में जारी है॥ कहां तक हम वृत्तान्त सुनावे कहतां पार नहीं पाते हैं॥ जीव॥ १० वच्छावत सव मिले हरख से सुख सम्पत से गाते हैं। वढ़े धर्म से प्रेम हमारा यही सभी हम चाहते हैं॥ चौवीस प्रभुजी का शरन लिया है लुल २ शीश नमाते हैं जीव॥ ११॥

॥ इति॥

भजन नं० ॥ १८ ॥

तर्ज—जगदीश गुण गाया नहीं गायक हुवा तो क्या हुवा।

दया धर्म दिल लाया नहीं जैनी हुवा तो क्या हुआ॥ टेर॥ बाड़े में गऊऐं भरी, देव योग से आगी लगी वचावे उसे पापी कहे पंथी हुवा तो क्या हुवा॥ दया॥ १॥ दया करी श्री पार्श्व नाथ नाम लेत दुःख जात। नेम प्रभु करुणा करी कुधर्म सरद्धा तो क्या हुवा॥ दया॥ २॥ दया दान की महिमा जब रहे दीन दुनिया जहान में। जिनाज्ञा से उल्टा चले नायक हुवा तो क्या हुवा॥दया॥३॥ मुह पर लम्बी मुंह पति और हाथ में ओघा लिया। करुणा दिल धारी नहीं साधु हुवा तो क्या हुवा॥ दया॥ ४॥

जिन नाम से माथो मुडायो उनको हि चूका कहे। चाकर नहीं लक्षण चोर के सेवक हुवा तो क्या हुआ ॥ दया ॥ ५ ॥ आप कछु जानत नहीं दुजों को मुढ़ कहते फिरें। अपनी श्रद्धा सच्ची नहीं दम्भी हुवा तो क्या हुवा ॥ दया ॥ ६ ॥ अब तो जल्दी चेन कर प्रभु से मांफी माँगलो। सत्यगुरू विना मुक्ति नहीं कुगुरू लग हुवा तो क्या हुवा ॥ दया ॥ ७ ॥

॥ इति ॥

भजन नं० ॥ १९ ॥

तर्ज—सांवर वंसी वाला।

तुं चेत मुरख मतवाला रट माला सुन लाला दुरगत को जड़ दे ताला ॥ टेर ॥ मिथ्या मत में जन्म गमावे, शुद्ध मार्ग में क्यों नहीं आवे, सत्गुरू विन मुक्ति नहीं पावे, दया दान उत्थापन वाला ॥ १ ॥ रट माला ॥ दान दीया दारिद्र जावे, जीव बचाया बहुसुख थावे, जैन सिद्धात साफ बतलावे, नेम राह बताने वाला ॥ २ ॥ रट माला ॥

॥ इति ॥

भजन नं० ॥ २० ॥

तर्ज़—गाफिल तु सोच मन में।

दिल में दया को लाकर दुखियों का दुख मिटा दो उसमें पड़ी जो विपता उसे दूर तुम हटादो ॥ टेर ॥ अन्धों को आश्रय

दो भूखों को रोटियां दो। प्यासे की प्यास बुझाके दिल प्राण तुम सटा दो ॥ दिल ॥१॥ बहरों और लुलों लंगडों की प्राण रक्षा कर दो दे वस्त्र पात्र उनको दिल से घृणा घटा दो ॥ दिल ॥ २ ॥ होवे अनाथ बालक दो विद्या दान उसको बिगडी हुई दशा को फिर से राह बतादो ॥ दिल ॥ ३ ॥ खोलो स्कूल कालिज शहरों और ग्राम सारे। जो गरीबों से बने हैं धनवानों धन लुटा दो ॥ ॥ दिल ॥ ४ ॥ दिल समझो अपना जैसा है दूजों का हि वैसा। नेमचन्द सभी यह तन धन परोपकार में बटा दो ॥ दिल ॥ ५ ॥

॥ इति ॥

भजन नं० ॥ २१ ॥

तर्ज—थियेटर।

कि सखियों सुख दुख देखो धर्म सदा संभालना रे। कि अपने पति की सेवा तन मन धन से पालना रे ॥टेर॥ दोहा॥ पहिले सेवा पति की, दुजे श्वसुर और सास, तीजे प्रभु को समरिये, जिन किया कर्म का नाश। कि खोटे कामों में न हरगिज मन को डालना रे॥ कि सखियो ॥ १ ॥ दोहा ॥ जो सतवंती स्त्री और गुणवती नार, सुखिया नर वह जगत में सदा रहे कल्याण, कि उसको ख्वाहिस होगी ज़रकी और न मारना रे॥ कि ॥ २ ॥ दोहा ॥ प्यारी के प्यारे बता, साचो साची बोल, कब आयेगे पति हमारे। बात अमोलक खोल, कि दरशन पहिले की तरह देकर अब न टालना रे॥ कि ॥ ३ ॥ दोहा ॥ दुर्लभ ज़ेवर और धन

दौलत पति न कोयसमान, गनी जगत में स्त्री। वही पतिव्रता जान, कि सखियों द्रढ नियत से वचन वडों के पालनारे ॥कि॥४॥

॥ इति ॥

भजन नं० २२

तर्ज—थियेटर

विन गौ रक्षा के परम धर्म विन लगी वीमारी रोज वढ़न, यह दुध दही लग गया विकन भाई आठ आने का सेर ॥ टेर ॥ शेर ॥ भारतवर्ष मे दूध की नदियाँ थी वह रहीं, इस वात को पिछली कितावें सारी थी कह रही। अहा जमाना हम पै कैसा आना है दिन वदिन, इस दुध का निशान लगा जगत से मिटन ॥ विन ॥ ॥१॥ शेर ॥ इस दुध के प्रताप से होते थे शूरवीर, वल दश हजार हस्ती के थे और वज्र से शरीर। अहा जमाना हम पै कैसा है आ रहा, जवानों के चेहरे पै वुढ़ापा है छारहा ॥ विन ॥ २ ॥ ॥ शेर ॥ विधवा का नाम वेदों में आया कहीं नहीं, जिनकी तादाद आज कल लाखों से कम नहीं। पत्थर से पटके चुड़ियाँ खुले हैं जिनके केश, गोवध का फल है मिल रहा पर सो रहा यह देश ॥ विन ॥ ३ ॥ शेर ॥ गो हत्या ही के कारणे भारत हुवा है धन हीन, फले हैजा प्लेग और लोग हुवे है वलहीन, प्रभु से मेरी विनती अव तो जरा सुध लीजिये, हिन्दुओं मुसलमानों को गो पालन का शिक्षण दीजिये ॥ विन ॥ ४ ॥

इतिः

भजन नं० २३

तर्ज—थियेटर

प्रभु वाणी सुनलीजेरे लीजेरे लीजे धर्म कीजेरे ॥ टेर ॥ जिन वाणी सत्य अमृत धारा-प्रभु स्मरण रस पीजे रे पी जेरे पीजे ॥ धर्म ॥ १ ॥ दान शील तप भावना भावो पाप कर्म याँ से छीजे रे छीजे रे छीजे ॥ धर्म ॥ २ ॥ छोड़ कुगुरू सु सङ्गति करीथे ज्ञान ध्यान चित्त दीजे रे दीजेरे दीजे ॥ धर्म ॥ ३ ॥ काम क्रोध मद लोभ गर्व छल दुष्टता जाल तजीजे रे तजीजे रे तजीजे ॥ धर्म ॥ । ४॥ नेम चन्द प्रभु शरण तिहारे भव को भ्रमण मेटीजे रे मेटी जेरे मेटीजे ॥ धर्म ॥ ५ ॥

इति

भजन नं० २४

तर्ज—गजल

आवो सब मिल प्रेम से महावीर के गुण गाईये ॥ टेर ॥ मोक्ष दाता कर्म घाता जग विख्याता वीर जिन । नित सवेरे उठ के त्रिसलानंद को सब ध्याइये ॥ आवो ॥ १ ॥ अष्टादश दुषण तजे प्रभु नाम को हर दम भजे । कर्म सब कट जायें जो दिल से स्नेह लगाईये ॥ आवो ॥ २ ॥ धीरता गम्भीरता और वह क्षमा की वीरता । मन वचन काया से न काहु पै क्रोध जगाइये ॥ आवो ॥ ३ ॥ प्रभु का उपदेश पालो दान शील तप भावना जो चाहो संसार तिरना अष्ट कर्म मिटाइये ॥ आवो ॥ ४ ॥

पालन करो प्रभुके वचनों का स्वच्छ हृदय से सभी। नेमचन्द कहे षट्काया के जीवों को वचाइये ॥ आवो ॥ ५ ॥

इति

भजन नं० २५

तर्ज—राम वे वन को न जारे

फूट को दूर हटा प्यारे, एक हो जावो भाई सारे ॥ टेर ॥ फूट रावण घर पड़ी, खोया राज्य सारा। बल में अति बलवान था तो भी राम से हारा। दूर विभीषण हुआ भ्राता रे ॥ एक ॥ ॥ १ ॥ दिल्ली के राजा पृथ्वीराज, जयचन्द कन्नौजी। फूट देख दोनों में चढ़ आये यवन गाजी। अभाग्य भारत को लगन मारे ॥ एक ॥ २ ॥ फूट हुई जिस घर में पैदा उत्पन्न हुआ सन्ताप। भारत गुलामी में जकड़ा है फूटही के प्रताप। फूट जो पड़ी बीच हमारे ॥ एक ३ ॥ देश की विगड़ी दशा हुआ धन धान्य का नाश रोग शोक घर घर में फैला हैजा प्लेग और खांश। कौवन दशा भारत सुधारे ॥ एक ॥ ४ ॥ श्वेताम्बर दिगम्बर तेरह पंथी सब आवो। प्रेम से मिल जैन सिद्धांतों को प्रगटावो। नेमचन्द फूट को मिटारे ॥ एक ॥ ५ ॥

इति

भजन नं० २६

तर्ज—तेरी जान पर फिदा हुं

गाफिल तूँ सो रहा है, है मोह नींद का डेरा ॥ टेर ॥ उठता

नहीं उठाये नींद हैं अति घनेरा, क्रोध लोभ मान माया ने प्यारे तुम्हीं को घेरा ॥ गाफिल ॥ १ ॥ इस नींद में से उठ कर चतन कुछ कर कमाई, है स्वार्थ को यह दुनिया से क्या भला है तेरा ॥ गाफिल ॥ २ ॥ तु' करता मेरा मेरा, नहीं है कोई भी तेरा। पाप धर्म संग चलेगा यह तेरा है वह मेरा ॥ गाफिल ॥ ३ ॥ दान शील तप भावना भावो, भव से जो छुटा चाहो ॥ कहे नेम चन्द्र सज्जनों करो धरम धन का ढेरा ॥ गाफिल ॥ ४ ॥

इति

भजन नं० २७

तर्ज—हाल कहु मैं सजनी

एक दिन चलना होगा प्यारे दुनियां से होकर न्यारे ॥ टेर। इसलिये करो धर्म कमाई जो आगे काम में आवे भाई। नहीं तो पड़ेगी तवाही फिरो चौरासी भटकत सारे ॥ एक ॥ १ ॥ यह काल नहीं छोड़ेगा तुम को बूढे वालक जवान सब को। पल पल की खबर कछु नाही क्या होवेगा क्या होवन हारे ॥ एक ॥ २ ॥ भाई बन्धु कुटुम्ब कबीला है स्वार्थ की सब लीला। अन्त समय नही कोई तेरा संग पाप पुण्य दोय जारे ॥ ३ ॥ नेमचन्द अर्ज गुजारे पालों जीवों की रक्षा प्यारे। नित उठ समरों जिन सारे क्षय पाप हो सारे तुम्हारे ॥ एक ॥ ४ ॥

॥ इति ॥

—:०:—

भजन नं० २८

तर्ज—गजल

उठके देखो जैनियों सोते हो किस अभिमान मे ॥ टेर ॥ क्या तुम्हारा ज्ञान था और क्या तुम्हें सन्मान था, थोदशा क्याहि रही जो आज आती कान में ॥ उठ ॥ १ ॥ वह तुम्हारा जीव दया का झंडा किस हाथों गया । कुछ खबर तुमको नहीं है जगतकिस चालानमें ॥ उठ ॥ २॥ बाल विवाह वृद्ध विवाह औरवेश्यानृत्य को । फेंक दो उखाड़ जड से समाज सेवा दान में ॥ उठ ॥ ३॥ सारे झगड़ों को मिटा लग जाओं धर्मोद्धारमें । मतहटो पीछे कभी नौवत पडे गरप्राणमें ॥ उठ ॥ ४ ॥ विद्याका प्रचार कर पालो वचन महा वीरके । त्याग हिंसाको लगो नेमचन्द प्रभुके ध्यान में ॥ उठ ॥ ५ ॥

इति

भजन नं० २९

तर्ज गजल ।

फिजूल खर्ची बंद कर दो यह सुनो मेरी कही कुमतिने डेरा जमाया यह सुनो मेरी कही ॥ टेर ॥ यह कुमति आके प्यारे तुम सबहिके दिलबस गई । बाल विवाह वृद्ध विवाह यह तुम्हे सिखला गई ॥ फिजुल ॥ १ ॥ विद्याका लव लेशभी प्यारे नहीं इस मह-

जवमें । वैश्या प्रीति प्यारे तुम सवको तवाह है कर गई ॥ फि-
ज़ुल ॥ २॥ जैनरीति से करो विवाह चलावो जैनरीत । छोड दो
कुरीतियां जोनीति सव हटा गई ॥ फिज़ुल ॥ ३ ॥ विद्याका प्रचार
करके हटावो अविद्या दैत्यीको । सुमतिका डेरा जमावो नेमचन्द
यह कह दई ॥ फिज़ुल ॥ ४ ॥

इति

—०*०—

भजन न० ३०

तर्ज—जगझुठारे सारा सांईयां

इस सच्चे जैनधर्म ने दयाका झंडा फरराया ॥ टेर ॥ ढूंढत
२ सत्यधर्म ढूंढ़ा । ढूंढिया सोहि कहलाया । तत्व पदार्थ हाथ
लगा है सवका भर्म मिटाया ॥ इस ॥ १ ॥ ज्योंदधी में से माखण
ढुंढे त्यों दयामें धर्म वताया । जिनका भेद जाने सो जाने मूरख
भेद न पाया ॥ इस ॥ २॥ अहिंसा पर्म धर्म सुखदाता वेद पुराण
सराया । दयाहीन अपना मत थापी धर्ममर्म नहीं लाया ॥ इस ॥
३॥ पुण्य उदय होवे जिस नरके सो इस मत में आया । सुत्र
सिद्धांत को देख लो दयामें धर्म वताया ॥ इस ॥ ४॥

इति

—०:—

भजन नं० ॥ ३१ ॥

तर्ज—गजल ।

उठो ब्रादर कस कमर, तुम धर्म की रक्षा करो । श्री वीर के तुम पुत्र होकर, गीदड़ों से क्यो डरो ॥ टर ॥ दुर्गति पड़ते जो प्राणी, को धर्म का आधार है । यह स्वर्ग मुक्ति में रखेगा, धर्म की रक्षा करो ॥ १ ॥ धर्मी पुरुप को देख पापी, गत स्वान वत् निन्दा करे । हो सिंह मुआफिक जवाब दो, तुम धर्म की रक्षा करो ॥२॥ धन को देकर तन रखो तन देके रखो लाज को । धन लाज, तन अर्पण करो, तुम धर्म की रक्षा करो ॥ ३ ॥ माता पिता भाई, जंवाई, दोस्त फिरे तो डर नहीं । प्रचार धर्म से मत हटो. तुम धर्म की रक्षा करो ॥ ४ ॥ धैर्य्य का धारो धनुप, और तीर मारो तर्क का । कुयुक्ति खडन करो, तुम धर्म की रक्षा करो ॥ ५ ॥ धर्मसिंह मुनि, लवजी ऋपि लोकाशाह संकट सहा । धर्म को फैला दिया, तुम धर्म की रक्षा करो ॥ ६ ॥ गुरू के परसाद से, कहे चौथमल उत्साहियों । मत हटो पीछे कभी, तुम धर्म की रक्षा करो ॥ ७ ॥

॥ इति ॥

—::—

भजन नं० ॥ ३२ ॥

तर्ज—रेखता ।

सदा जो धर्मपर रहती वहो कुलवन्त है नारी ॥ उल्लंघे न कभी

आज्ञा लगे वह कंथको प्यारी ॥ टेर ॥ पढ़ो विद्या प्रेम धरके बनो नवतत्व की ज्ञाता । छुडावो विनय कर पति से जो हो कुचाल बदकारी ॥ १ ॥ कोई पर पुरुष के आगे लगा ताली नहीं हँसना । बाप भाई उसे समझो इसी में बात है भारी ॥ २ ॥ भोपा आदि अधम जाति को अपना बताओ नहीं हाथ । भवानी भैरूं नहीं मानो, पशुकी घात जहां जारी ॥ ३ ॥ श्वसुर श्वासु की लज्जा को विसारे न कभी हरगिज । पढे इतिहास सीता का जो हुई कैसी धर्म धारी ॥ ४ ॥ करें जो काम कोई घर में तो पहिले सोचले दिल में । सप में सपदा जाने समझ कर हक में हितकारी ॥ ५ ॥ कहे मुनि चौथमल बहिनों तुम्हारे गुणों की माला । अरे कुटिला कुलक्षणी की हुई है बहुत ही ख्वारी ॥ ६ ॥

॥ इति ॥

—:o:—

भजन न० ३३

तर्ज—राग मालकोशा

अरे नर सोच अपने मनमे । तुमको जाना है एक छिन में ॥ टेर ॥ लक्ष चौरासी भमना आया मनुष्यके रे सदन में, पुर्व पुण्य से नर देह पाई भूल गयो भजनने ॥ अरे ॥ १ ॥ बूढ़ापन में विपति ने घेरा दिन रात जात दुखन में । तो पण धर्म की बात न चावे डुबो आनर पनमें ॥ अरे ॥ २॥ दया दान विन मुक्ति नांहीं समझ २ मानी मनमें । नरभव है निरवाणको कारण दया धर्म

रख दिलमें ॥ अरे ॥ ३ ॥ सम्वत उगणीसे गुणयासी माहें भादवा वदी आठमने । श्रीकृष्णके जन्म दिवस पर रहे आनन्द मंगलमें ॥ अरे ॥ ४॥

ओं शान्ति ! शान्ति !! शान्ति !!!

पुस्तक प्राप्ती स्थान ।

जिन्हें यह पुस्तक मंगानी हो वे डाक व्यय के लिये दो आने का टिकट भेज दे ।

श्रीयुक्त मगन मलजी बच्छावत

ठिकाना बच्छावतों की गवाड़

बीकानेर,

जे० बी० रेलवे ।

नेमचन्द्र बच्छावत

नं० ३ मल्लिक ष्ट्रीट,

कलकत्ता ।